सम्पादकीयम्

प्रिय सुधीजन पाठको ! राष्ट्रिय वेद विद्या प्रतिष्ठान के वेद विद्या के इस २४ वें अङ्क को आपके करकमलों में प्रस्तुत करते हुए हमें प्रसन्नता है कि आपके चिन्तन, मनन एवं व्यवहारार्थ ऐसे लेख आपको निश्चय ही बहुत कुछ देना चाहेंगे सोचने के लिए ज्ञान सामग्री, जिसमें वेद विषयक कथ्यों एवं तथ्यों से परिचय होगा । प्रतिष्ठान यह दावा नहीं करेगा कि सर्वत्र सर्वथा आपको तत्तद् विचारों से विश्वस्त किया जाय, हम यह भी दावा नहीं करेंगे कि आपके लिए यह **'एतद्धि कृत्स्नं वेदज्ञानम्'** और यह भी दावा नहीं करेंगे कि आपके लिए यह पर्याप्त हो गया है, इसके अतिरिक्त अन्य कुछ शेष नहीं है। चूँकि विद्या का, ज्ञान का सागर अनन्त है - **'अनन्त पारं किल शब्दशास्त्रम् ।'** वेद को तो **'सर्वज्ञानमयो हि सः, वेदोऽखिलो धर्ममूलम्'** । इन वाक्यों के द्वारा वेदज्ञान को समस्त विद्याओं, ज्ञानतत्त्व एवं धर्मतत्त्व का भण्डार तथा मूल कहा गया है । वेद वस्तुतः मौलिक ज्ञान एवं दिशा की अभिव्यक्ति देता है समस्त सृष्टितत्त्व, जीवतत्त्व एवं ब्रह्मतत्त्वात्मक रहस्यों की । परवर्ती वैदिक वाङ्मय में इन्हीं तीन प्रमुख तत्वों का विशद विस्तार है । विद्वानों ने भी अपनी टीकाओं, फक्किकाओं, भाष्यों एवं सूत्रों के माध्यम से समय-समय पर इनकी विस्तृत प्रविधि प्रदान की है । ऋषियों एवं आचार्यों ने इनकी व्यापकता को देखकर **नेति नेति** कहा है । वाक्तत्व को ब्रह्म कहा है । **वाग् वै ब्रह्म** जिसकी व्याख्या गत अङ्कों में कतिपय स्थलों पर प्रस्तुत कर चुका हूँ । ब्रह्मपरमात्म तत्त्व को भी वाक् कहा गया है और शब्दतत्त्व को भी, अतः दोनों को ही अनन्तता की दृष्टि से ऋषियों द्वारा नेति-नेति कहा है ।

चारों वेद संहिताओं में मन्त्र सङ्ख्या लगभग २०३८९ है, अकेले ऋग्वेद की शाकल संहिता में ही १०५५२ मन्त्र हैं । वह भी ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद इन चारों वेदों की मात्र छै शाखाओं अर्थात् क्रमशः शाकल, माध्यन्दिन, कौथुमी, राणायणीय, जैमिनीय और शौनक शाखा की हैं । महर्षि पतञ्जलि ने महाभारत एवं चरणव्यूहकार ने इन चारों वेदों की शाखाओं की सङ्ख्या ११३१ उल्लेखित की हैं जिनमें ऋग्वेद की **एकविंशतिधा बाह्वृच्यम्** अर्थात्-२१, यजुर्वेद की **एकशतमध्वर्यु शाखा** अर्थात् १०१, सामवेद की **सहस्रवर्त्मा साम** अर्थात्-१०००, अथर्ववेद की **नवधा आथर्वणम्** अर्थात् ९ अथर्ववेद की हैं । तो फिर कहना होगा कि शेष ११२५ शाखाओं की भी उपलब्धता होती तो अनुमान लगायें कि कितनी विपुल मन्त्र सङ्ख्या इन शाखाओं की होती । मानव जाति का यह तो दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि आज चारों वेदों की मात्र -

ऋग्वेद - शाकल, आश्वलायन और शाङ्खायन
यजुर्वेद - माध्यन्दिन, काण्व, तैत्तिरीय, मैत्रायणी, काठक और कपिष्ठल कठ
सामवेद - कौथुमी, राणायनीय और जैमिनी
अथर्व - शौनक और पैप्पलाद

अर्थात् कुल १४ शाखा ही उपलब्ध हैं । यह बताना आवश्यक है कि अब तक प्रचलन में मात्र शाकल शाखीय ऋग्वेद ही प्रचलित है। अभी कुछ वर्ष पूर्व इन्दिरा गाँधी कला केन्द्र ने

ऋग्वेद की आश्वलायन शाखा का प्रकाशन कर एक महनीय कार्य किया है। वहीं मुझे गर्व है यह लिखते हुए कि अबतक लगभग सर्वथा विलुप्त ऋग्वेद की शाङ्खायन शाखा को महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रिय वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन ने अपने रजत जयन्ती समारोह पर २०१२ में प्रकाशित कर वेद विद्या संरक्षण के क्षेत्र में एक नूतन इतिहास रचा है । वर्तमान में आज सम्पूर्ण देश में प्रचलित मात्र दस शाखा ही हैं इसमें भी ऋग्वेद की शाङ्खायन शाखा के सम्पूर्ण भारत वर्ष में राजस्थान के बांसवाड़ा शहर के झा और नागर परिवार में ही प्रचलित है । इनके बाद इस शाखा के प्रचलन की परम्परा समाप्त ही हो जायेगी । राष्ट्रिय वेद विद्या प्रतिष्ठान प्रयासरत है कि इसके कुछ विद्यार्थी तैयार हो जायें । इस सम्बन्ध में मैंने दोनों परिवार के विद्वानों से बात की है ।

यहाँ मेरा इस बात पर एक बल देना था कि आज मात्र १४ शाखा ही अस्तित्व में हैं। शेष १११७ शाखा जो कभी प्रचलित एवं अस्तित्व में थीं अथवा रहीं होंगी फिर भी इनमें से अवशिष्ट ये ही वेद शाखाएं आधुनिक युग में संसार के समक्ष विशालतम ज्ञान की भण्डार हैं । काश सम्पूर्ण ११३१ शाखाएं होतीं तो उनका कितना अकल्पनीय ज्ञान भण्डार होता । एक-एक शब्द, एक-एक वाक्य अथवा एक-एक ग्रन्थ पर भी अनेक ग्रन्थ रचे गये हैं तथा निष्ठावान् विद्वान् लोग उसके ऊपर समस्त जीवन भी लगा देते हैं। अतः शब्दज्ञों के लिए यही अमृतत्त्व है महाभारत में भी कहा गया है कि -

आचार्य योनिमिह प्रविष्य, कुर्वन्ति शास्त्राभ्यसनं सदैव ।
ते ह वै यदक्षर साधनेन, सदाऽ मृतत्वमभिसाधयन्ति॥

निश्चय ही शास्त्राभ्यसनी होकर अक्षर साधना करने वाले सात्विकी जीवन जीवी सदा अमृतत्व को प्राप्त करते हैं, यह मानव का अन्ततोगत्वा परम लक्ष्य है यदि जीवन के समस्त सकारात्मक एवं सत्वप्रधानीय तत्त्वों का आनन्द लेना चाहते हैं तो उनके लिए अक्षर साधना जिसका आभ्यन्तरीय स्वरूप आत्मतत्त्व का सशक्त होना है, उसके नैकट्य की प्राप्ति की दिशा में बढ़ने के लिए चिन्तन एवं व्यवहार सुतराम अपेक्षित है ।

इस अङ्क में मनीषी विद्वद्धौरेयों के प्रस्तुत लेख उक्त दिशाबोधन एवं विचारों की समृद्धि के परिप्रेक्ष्य में अवश्य ही सहायक होंगे, ऐसा मेरा मानना है । लेखक के विचारों से सर्वाशतः उत वा अंशतः सहमत होना अथवा ना होना यह तो आपकी तर्कशक्ति एवं विवेक पर निर्भर करता है। तर्क को वैदिक वाङ्मय में ऋषिसञ्ज्ञक माना है **तर्क एवं ऋषिः,** आयें ऋषित्व की ओर बढ़े, यही हमारी सनातन वैदिक परम्परा है ।

प्रो. रूप किशोर शास्त्री
सचिव
महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान,
(मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, भारत सरकार)
वेदविद्या मार्ग, चिन्तामण गणेश, उज्जैन